amar 24_Newspro-Template 23-02-2020 18:44 Page 1

अमर उजाला

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली । सोमवार, 24 फरवरी 2020

पैसों से सफलता नहीं मिलती। पैसे कमाने की स्वतंत्रता से सफलता मिलती है।
-नेल्सन मंडेला

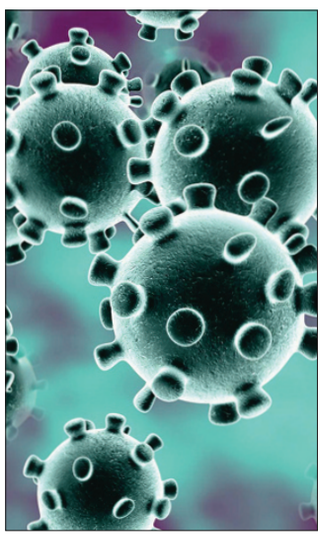

कोरोना के संक्रमण के बढ़ते मामलों को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वैश्विक सहयोग की जरूरत बताई है, लेकिन चीन ने भारतीय मदद के प्रस्ताव का अभी तक जवाब भी नहीं दिया है, जिससे वुहान में फंसे भारतीयों की वापसी अनिश्चित हो गई है।

भय और आशंका के बीच

चीन में कोरोना वायरस के नए मरीजों की संख्या में कमी आने के बावजूद दुनिया भर में इसके बढ़ते मामले न केवल बेहद चिंताजनक हैं, बल्कि इसका मुकाबला करने के लिए मिल जुलकर प्रयास करने और रणनीति बनाने की भी मांग करते हैं। ईरान में रविवार को ही कोरोना वायरस से तीन मौतें हुईं, जिससे मृतकों की कुल संख्या बढ़कर आठ हो गई है। जबकि चीन के बाद कोरोना से संक्रमित होने के सबसे ज्यादा मामले दक्षिण कोरिया में आए हैं। जापान के तट पर लंगर डाले क्रूज डायमंड प्रिंसेज पर सवार लोगों में कोरोना तेजी से फैल रहा है, और वहां वायरस से संक्रमित भारतीयों की संख्या बढ़कर अब बारह हो गई है। इसके अलावा इटली, फ्रांस, अमेरिका, इस्राइल, लेबनान आदि देशों में भी वायरस तेजी से फैल रहा है। इसी को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने विश्व समुदाय से सहयोग में तेजी दिखाने का आह्वान किया है। इन इसके बीच भारत के सहयोग के प्रस्ताव पर चीन की चुप्पी खलने वाली तो है ही, इसका खामियाजा वुहान में आशंकाओं के बीच रह रहे करीब सौ भारतीयों को भुगतना पड़ रहा है। दरअसल विगत 13 फरवरी को हमारी सरकार ने दवाओं और राहत सामग्री से लैस एक सैन्य विमान चीन भेजने का प्रस्ताव रखा था, और वापसी में वुहान में फंसे भारतीयों को लौटा लाने की योजना थी। लेकिन बीजिंग ने अब तक उस प्रस्ताव को हरी झंडी नहीं दी है। हालांकि हुबेई प्रांत से अनेक उड़ानें बाधित और स्थगित हुई हैं। पर हाल के दिनों में बीजिंग ने फ्रांस, जापान और यूक्रेन की उड़ानों को इजाजत दी है। भारत द्वारा मदद का प्रस्ताव भेजे जाने से पहले पांच दिनों में दो भारतीय उड़ानों को मंजूरी मिल गई थी। लेकिन मदद के प्रस्ताव के बाद से ही चीन का बदला हुआ रवैया हैरान करने वाला है। विपत्ति के समय मदद लेने के मामले में भी संभवतः उसकी भारत-विरोधी ग्रंथि आड़े आ रही है। इस असहयोगी रवैये के कारण चीन कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में अपना बहुत नुकसान कर चुका है। एक तरफ विश्व स्वास्थ्य संगठन इस वायरस से लड़ने के लिए वैश्विक मदद का आह्वान कर रहा है, दूसरी ओर, भारत से मदद लेने में चीन आनाकानी कर रहा है। इसका दुर्भाग्यपूर्ण पक्ष यह है कि वुहान में फंसे भारतीयों की वापसी अनिश्चित हो गई है।

पाकिस्तान को काली सूची में कौन डालेगा

जून, 2018 से ही फाइनेंशियल ऐक्शन टास्क फोर्स (एफएटीएफ) की ग्रे सूची में शामिल पाकिस्तान एक बार फिर दंड से बच गया है। आतंकवाद का वित्तपोषण या मनी लॉन्डरिंग के खिलाफ कोई महत्वपूर्ण कार्रवाई न करने के बावजूद एफएटीएफ ने पाकिस्तान को काली सूची में नहीं डाला। अपना कार्ड अच्छी तरह खेलते हुए पाकिस्तान ने संभवतः दूसरे सदस्यों को बताया कि इस मुद्दे पर अपनी आंखें बंद रखने से उन्हें ज्यादा लाभ मिलेगा। जबकि कुछ दूसरे देशों ने सीधे-सीधे धार्मिक आधार पर पाकिस्तान का बचाव किया।

एफएटीएफ पेरिस स्थित एक अंतरसरकारी निकाय है, जिसका गठन 1989 में मनी लॉन्डरिंग पर अंकुश लगाने के लिए किया गया था। लेकिन 9/11 की आतंकी घटना के बाद आतंकी वित्तपोषण पर अंकुश लगाने के लिए भी इसके कार्य क्षेत्र को बढ़ा दिया गया। इस निकाय के 39 सदस्य हैं और यह संगठन निश्चित आधार पर सदस्य देशों के आचरण पर फैसला करता है। किसी भी देश को ग्रे सूची से हटाने के लिए 12 देशों के समर्थन की जरूरत होती है, जबकि मात्र तीन देशों के समर्थन से ही किसी देश को काली सूची में डालने से रोका जा सकता है। एफएटीएफ सबसे खराब प्रदर्शन करने वाले देश को 'कॉल फॉर ऐक्शन' की श्रेणी में रखता है।

लगातार ग्रे सूची में होने के बावजूद पाकिस्तान का आचरण सुधरा नहीं है। लश्कर और जैश जैसे आतंकी संगठन लगातार भारत के खिलाफ आतंकी कार्रवाइयों में संलिप्त है। आतंकवाद से प्रभावित भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर गुहार लगाई है कि संयुक्त राष्ट्र जैसी वैश्विक संस्था को पाकिस्तान जैसे देशों के खिलाफ, जो आतंकी गुटों का प्रायोजक है, कार्रवाई करने के मामले में तटस्थ होना चाहिए।

अफगानिस्तान में पाक सहयोग का इच्छुक अमेरिका इस्लामाबाद को नाराज नहीं कर सकता। और एफएटीएफ का नेतृत्व अभी चीन के पास है। इसलिए आतंकी वित्तपोषण के बावजूद पाकिस्तान फिर बच गया।

आनंद कुमार

संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि सैयद अकबरुद्दीन ने 20 नवंबर, 2019 को अपराध-आतंक की साठगांठ के वैश्विक खतरे से निपटने के लिए बिना किसी दोहरे मापदंड के शून्य सहिष्णुता के दृष्टिकोण का आह्वान किया था।

यहां तक कि अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने भी आतंकी गुटों के खिलाफ कार्रवाई न करने के लिए पाकिस्तान को फटकार लगाई है। उसने अपने मूल्यांकन में क्षेत्रीय आतंकी गुट को खतरा बताया है। उसने पाकिस्तान सरकार पर लश्कर और जैश को पाकिस्तान में धन जुटाने, भर्ती करने और प्रशिक्षण देने से रोकने में विफल रहने तथा जुलाई, 2018 का आम चुनाव लड़ने के लिए लश्कर से जुड़े उम्मीदवारों को अनुमति देने का आरोप लगाया।

इस आकलन के बावजूद अमेरिका एक खास बिंदु से आगे नहीं बढ़ा है। ट्रंप ने अपने चुनाव प्रचार के दौरान वादा किया था कि वह अपने सैनिकों को अफगानिस्तान से वापस बुला लेंगे। हालांकि इस प्रयास में वह अब तक सफल नहीं हुए हैं। अमेरिका ने दोहा में तालिबान के साथ शांति वार्ता की, लेकिन उसके वांछित परिणाम नहीं मिले। अमेरिका अब भी पाकिस्तान पर उम्मीद लगाए बैठा है (जहां से तालिबान का शीर्ष नेतृत्व काम करता है) कि तालिबान के साथ शांति वार्ता में वह मध्यस्थता करेगा, और जो उसकी सेना को लौटने और इतिहास के सबसे लंबे युद्ध को खत्म करने की अनुमति देगा। अगर पाकिस्तान को काली सूची में डाल दिया जाता है, तो उसका व्यवहार शत्रुतापूर्ण होने की आशंका रहेगी और तालिबान के साथ शांति वार्ता में वह सहयोग नहीं करेगा।

हाल ही में जब संयुक्त राष्ट्र के महासचिव जनरल एंटोनियो गुटेरस अफगान शरणार्थियों पर आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने पाकिस्तान पहुंचे थे, तब उन्होंने अफगान शरणार्थियों की मेजबानी में पाकिस्तान की भूमिका की सराहना की, लेकिन उन्होंने इसका पूरा ध्यान रखा कि आतंक पैदा करने में हक्कानी नेटवर्क की भूमिका की ओर इंगित न किया जाए। उन्होंने ट्रंप की तरह कश्मीर मामले में मध्यस्थता की पेशकश कर पाकिस्तान को खुश करने की कोशिश की। अंतरराष्ट्रीय समुदाय को डर है कि अगर पाकिस्तान को काली सूची में डाल दिया गया, तो पहले से ही बदहाल उसकी अर्थव्यवस्था और खराब हो जाएगी। यह पाकिस्तान के खात्मे का कारण बन सकता है, जिसके चलते दुनिया और उसके पड़ोसियों के लिए परेशानी पैदा हो सकती है।

पाकिस्तान ने भी मुस्लिम जगत की राजनीति को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करने की कोशिश की। हाल के दिनों में खाड़ी में हालात अस्थिर रहे हैं। सऊदी अरब का राजनीतिक प्रभाव कम हुआ है और ईरान का कद बढ़ा है। ऐसे माहौल में तुर्की मुस्लिम जगत का नया नेता बनकर उभर रहा है। इस उद्देश्य के साथ कुआलालंपुर में एक शिखर बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें पाकिस्तान को भी बुलाया गया था। लेकिन पाकिस्तान ने अंतिम क्षण में उसमें जाने से इन्कार कर दिया, जब सऊदी अरब ने उसके चालीस लाख नागरिकों को वापस भेजने और पाकिस्तानी बैंकों में रखे अरबों डॉलर निकालने की धमकी दी। बाद में इमरान खान ने मलयेशिया का दौरा कर उसे खुश करने की कोशिश की, और तुर्की के राष्ट्रपति तैयप एर्दोगन को पाकिस्तान आने का निमंत्रण दिया। तुर्की और पाकिस्तान के बीच मजबूत रक्षा भागीदारी भी है। एर्दोगन एफएटीएफ की बैठक से ठीक पहले पाकिस्तान गए और खुलेआम पाकिस्तान को काली सूची में जाने से बचाने का उन्होंने वादा किया।

पाकिस्तान ने कुछ दिखावटी उपाय भी किए, जैसा कि वह एफएटीएफ की हर पूर्ण बैठक से पहले करता है। उसने आतंकी फंडिंग के आरोप में हाफिज सईद को गिरफ्तार किया और कहा कि एक और आतंकी सरगना मसूद अजहर लापता है। हालांकि भारत ने मसूद अजहर के पाकिस्तान में होने के सबूत दिए।

पाकिस्तान को काली सूची से बाहर रहने के लिए तीन देशों के समर्थन की जरूरत थी। ये तीन वोट उसने तुर्की, मलयेशिया और चीन की मदद से आसानी से हासिल कर लिए। इसके अलावा, चीन अभी एफएटीएफ का नेतृत्व कर रहा है। इसमें शायद अमेरिका की भी मौन सहमति थी, जो उम्मीद कर रहा है कि अफगानिस्तान से निकलने में पाकिस्तान मदद कर सकता है। ऐसा होगा या नहीं, यह तो वक्त ही बताएगा। फिलहाल कुछ समय के लिए पाकिस्तान को वह मिल गया है, जिसकी उसे तलाश थी।

-लेखक मनोहर पारिकर इंस्टीट्यूट ऑफ डिफेंस स्टडीज ऐंड एनालिसिस में एसोसिएट फेलो हैं।

गांधी दर्शन

सभी रोटी के लिए मेहनत करें तो ऊंच-नीच का भेद दूर हो

***कायिक** श्रम अंग्रेजी शब्द 'ब्रेड लेबर' शब्द का अनुवाद है। रोटी के लिए हर आदमी का मजदूरी करना, हाथ-पैर हिलाना ईश्वरीय नियम है। इसकी झलक मेरी आंखें 'भगवतगीता' के तीसरे अध्याय में पा रही हैं। यज्ञ किए बिना खाने वाला चोरी का अन्न खाता है। यहां यज्ञ का अर्थ कायिक श्रम या रोटी श्रम की शोभा देता है। मजदूरी न करने वालों को खाने का क्या अधिकार हो सकता है? करोड़पति भी यदि पलंग पर पड़ा रहे और मुंह में किसी के खाना डाल देने पर खाए, तो वह बहुत दिनों तक खा न सकेगा। उसमें उसके लिए आनंद भी नहीं रह जाएगा। किसान से हवा खाने, कसरत करने को कोई नहीं कहता। और संसार के अरबों से भी अधिक मनुष्यों का निर्वाह खेती से होता है। शेष दस प्रतिशत मनुष्य इनका अनुकरण करें, तो संसार में कितना सुख, कितनी शांति और कितना आरोग्य फैले। यदि खेतों के साथ बुद्धि का मेल हो जाए, तो खेती के काम में अनेक कठिनाइयां सहज में दूर हो जाएं। इसके सिवा यदि कायिक श्रम के इस निरपवाद नियम को सभी मानने लगें, तो ऊंच-नीच का भेद दूर हो जाए। इस समय तो जहां उच्चता की गंध भी न थी, वहां भी, अर्थात वर्ण व्यवस्था में भी वह घुस गई। मालिक-मजदूर का भेद सर्वव्यापक हो गया है, और गरीब-अमीर से ईर्ष्या करने लगा है। यदि सभी अपनी रोटी के लिए खुद मेहनत करें, तो ऊंच-नीच का भेद दूर हो जाए। जिसे अहिंसा का पालन करना है, सत्य की आराधना करनी है, उसके लिए तो कायिक श्रम रामबाण रूप हो जाता है।*

इस समय तो जहां उच्चता की गंध भी न थी, वहां भी, अर्थात वर्ण व्यवस्था में भी वह घुस गई।

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

-गांधी वांग्मय से।

मंजिलें और भी हैं

>> गुरमीत सिंह

लावारिस वार्ड के मरीजों को रोज खाना खिलाता हूं

मैं अपनी कमाई का दस प्रतिशत हिस्सा मरीजों को खाना खिलाने में खर्च करता हूं। पिछले कई साल से मैं अस्पतालों में भर्ती, मानसिक रूप से बीमार व दिव्यांगों की सेवा कर रहा हूं। अपने हाथों से मरीजों को खाना खिलाना मुझे अच्छा लगता है। मैं हमेशा सोचता हूं कि इंसान की उम्र बहुत कम होती है। इसलिए ज्यादा से ज्यादा लोगों तक मदद पहुंचाना मेरे अभियान का हिस्सा है। मैं बिहार की राजधानी पटना का रहने वाला हूं और कपड़े की एक दुकान चलाता हूं। दिन भर दुकान पर रहने के बाद शाम को मैं इन मरीजों व असहायों के पास पहुंचता हूं।

यह सब कुछ यों शुरू हुआ। एक दिन मेरी दुकान से कुछ दूर प्लास्टिक की थैलियां बेचने वाली एक महिला के पास बुरी तरह से झुलस चुका एक लड़का आया। वह अपना या परिवार का नाम बताने की हालत में नहीं था। महिला ने मुझे सहयोग के लिए बुलाया, तो मैं उस लड़के को अस्पताल ले गया। वहां जाकर देखा, तो डॉक्टर हड़ताल पर थे। खैर किसी तरह आपातकालीन वार्ड में उस लड़के को भर्ती करवाकर उसका इलाज शुरू करवाया। उस रात मैं घूमते समय अस्पताल के लावारिस वार्ड में चला गया। मैंने देखा कि हड़ताल के कारण गरीब और दिव्यांग मरीज बदहाल पड़े थे। उस वक्त मुझे एहसास हुआ कि पैसा न हो, तो इंसान कितना लाचार और मजबूर हो जाता है। उसके बाद मैंने खुद से एक वादा किया कि कुछ भी हो जाए, विपरीत परिस्थितियों में भी किसी की मदद करना मैं छोड़ूंगा नहीं। इसके बाद मैं लगातार पटना मेडिकल कॉलेज जाने लगा और वहां के कुख्यात लावारिस वार्ड में जाकर बीमार, लाचार, अशक्त और भूखे मरीजों को खाना खिलाने का काम करने लगा। शुरुआती दौर में जब मैंने अपनी सीमित कमाई से अनाथों और लावारिस लोगों को खाना खिलाना शुरू किया, तब आर्थिक तंगी की वजह से कई बार मुश्किलें भी आईं। लेकिन मैंने दोगुनी मेहनत की और खुद से किया वादा न तोड़ने का संकल्प दोहराया, तो सब ठीक हो गया। मेरे परिवार में पांच बेटे हैं। बड़े बेटे की शादी हुई, तो मैं रोज की तरह अस्पताल पहुंच गया। वहां वार्ड में मौजूद मरीजों को खाना खिलाया, और फिर बेटे की बारात में शामिल हो गया। ऐसे कुछ मौकों पर परिवार में इस काम को लेकर विरोध के स्वर भी उठे हैं। पर मैंने कभी हार नहीं मानी, और अब सब इस काम में मेरा सहयोग कर रहे हैं। कई बार ऐसी स्थिति थी कि खाने के लिए कोई इंतजाम नहीं था। तब थोड़े-बहुत पैसों का इंतजाम कर सब्जी, चावल, दाल खरीदकर घर में ही खाना बनवाकर मैंने अस्पताल के मरीजों को खिलाया है। लावारिस वार्ड में ज्यादातर ऐसे मरीज होते हैं, जो अपने हाथों से खाना नहीं खा पाते। इस तरह की स्थिति में मैं अपने हाथों से उनको खाना खिलाता हूं। इलाज होने के बाद जब कई बार मरीज स्वस्थ हो जाते हैं, तो उन्हें उनके घरवालों से संपर्क करवाता हूं, ताकि वे उनके साथ जा सकें। अब लोग मुझे लावारिस लोगों की जानकारी भी देने लगे हैं। मैं किसी लावारिस की जानकारी मिलने पर उस जगह पर जाता हूं। उसे वहां से लाकर अस्पताल में भर्ती करवाता हूं। मैं नियमित तौर पर रक्तदान करता हूं और जरूरत पड़ने पर मरीजों के लिए दवाओं के बिल का भुगतान भी करता हूं। ये मरीज अब मुझे अपने से लगते हैं। मैं उनके दुख-दर्द सुनता हूं और उनका सहयोग करता हूं ।

मैं नियमित तौर पर रक्तदान करता हूं और जरूरत पड़ने पर मरीजों के लिए दवाओं के बिल का भुगतान भी करता हूं।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

सुपर वायरस का खतरा तो नहीं

कोरोना वायरस के घातक सुपर वायरस बनने की आशंका भी जताई जा रही है। बिल गेट्स ने सुपर वायरस के असर का कंप्यूटर मॉडल तैयार किया था, जिसके मुताबिक, इससे भारी नुकसान हो सकता है और अधिकतर देश इसे नियंत्रित करने में सक्षम नहीं होंगे।

मानवता को खतरा परमाणु बम या मिसाइल से नहीं, वायरस से है। पिछली शताब्दी का सबसे खतरनाक वायरस स्पेनिश फ्लू था। 1918 में पृथ्वी पर हर तीसरा व्यक्ति इस वायरस से ग्रस्त था और एक साल में उसने पांच से दस करोड़ लोगों की जान ली थी। इस समय कोरोना वायरस का दुनिया भर में खौफ है। इससे अब तक 2,300 से अधिक जानें जा चुकी हैं। अब इस वायरस का फैलाव तेजी से दूसरे देशों में हो रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चेतावनी देते हुए कहा है कि कोरोना वायरस के फैलाव को रोकने की संभावनाएं कम होती जा रही हैं। इसीलिए उसने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से तेजी से कदम उठाने का आह्वान किया है, जिनमें वित्तपोषण भी शामिल है। कोरोना के एक घातक सुपर वायरस बनने की आशंका भी जताई जा रही है। जंगली पशु-पक्षियों में करीब 16 लाख भिन्न प्रकार के वायरस हैं, जिनमें से हम मात्र 3,000 के बारे में जानते हैं। यानी 99.8 प्रतिशत वायरसों के बारे में हमारी जानकारी नगण्य है। इनमें से कोई भी सुपर वायरस बन सकता है।

स्वाइन फ्लू का वायरस किसी पक्षी के इनफ्लुएंजा वायरस और मानव इनफ्लुएंजा वायरस के मिलने से बना था। दोनों वायरस पक्षी और मानव, दोनों के संपर्क में आने वाले किसी सूअर के अंदर एक साथ पहुंचे और मिल गए। फिर यह नया वायरस मानव शरीर में पहुंचा। चूंकि हमारे शरीर की इम्युनिटी इस नए वायरस का मुकाबला करने के लिए सक्षम नहीं थी। ऐसे में, एक से दूसरे मनुष्य को संक्रमित करते हुए इस वायरस ने 2009 में दो लाख लोगों की जान ले ली।

सृजनपाल सिंह

किसी वायरस के सुपर वायरस बनने के लिए तीन चीजें जरूरी हैं, म्यूटेशन यानी उत्परिवर्तन। इसका एक हिस्सा किसी अनजान जंगल में पनपने वाले वायरस का हो और दूसरा हिस्सा मानव को संक्रमित करने वाले किसी साधारण वायरस का। ऐसा करने से वह हमारे इम्युनिटी तंत्र को निष्क्रिय कर सकता है। दूसरी चीज है संक्रमण क्षमता। यदि सुपर वायरस ऐसी जगह मौजूद हो, जहां भारी संख्या में लोग इकट्ठा होते हैं और लंबी यात्राएं करते हैं, तो वायरस के फैलने की आशंका काफी बढ़ जाती है। और तीसरी चीज है, दवाओं की प्रतिरोधक क्षमता बना लेना। कोई वायरस दवाओं का प्रतिरोध बना ले, तो इलाज के लिए नई दवा ईजाद करनी होगी। इसमें लंबा समय लगता है और वायरस को फैलने का अवसर मिल जाता है।

सुपर वायरस से निपटने के लिए एक बहुआयामी स्वास्थ्य प्रणाली और प्रोटोकॉल तैयार रखना होगा, जिसके तहत तेजी से किसी बीमारी के स्कैन करने के यंत्र, अस्पतालों में मरीजों को अलग रखने की क्षमता, किसी भी संक्रमण के बारे में तेजी से जानकारी साझा करना और जनता को जागरूक करना आदि शामिल हैं। मांस-मछली बाजारों पर कड़ी नजर रखने और जंगली जानवरों का मांस बेचने पर प्रतिबंध जरूरी है। ग्लोबल वॉर्मिंग से करोड़ों वर्ष पुरानी बर्फ पिघल रही है। ऐसे में, लंबे समय से दबे हुए वायरसों के सक्रिय होने की आशंका है। जंगलों की कटाई और खनिजों के दोहन के दौरान जंगली जानवरों के संपर्क में आने के कारण मनुष्य में संक्रमण की आशंका बढ़ रही है।

बिल गेट्स ने दो साल पहले सुपर वायरस के असर का एक कंप्यूटर मॉडल तैयार किया था। उनके मुताबिक, एक सुपर वायरस छह महीने में तीन करोड़ जान ले सकता है और अधिकतर देश इसे नियंत्रित करने में सक्षम नहीं होंगे। कोरोना वायरस ऐसे ही एक सुपर वायरस के आने का संकेत भी हो सकता है। मानवता को ऐसी किसी भी चुनौती से निपटने के लिए तैयार रहना होगा।

हरियाली और रास्ता

जॉन, नौकरी और संगीत

जॉन बर्लिंगटन की कहानी, जिसने नौकरी छूटने के बाद संगीत को अपना शौक बनाया और उसी में उन्हें खुशियां मिलीं।

जॉन बर्लिंगटन एक सफल संगीत निर्देशक थे। एक दिन उन्हें एमबीए के कुछ छात्रों को संबोधित करने के लिए बुलाया गया। वह बोले, आज तक आप लोगों ने बहुत लोगों को यह कहते सुना होगा कि मेहनत ही सफलता की कुंजी है। मैं जब आपकी उम्र का था, तब मैंने भी यही किया था। इंजीनियरिंग के बाद मैंने लक्ष्य तय किया कि मुझे अच्छी से अच्छी कंपनी में ऊंचे ओहदे तक पहुंचना है। दो साल के अंदर मैंने वह लक्ष्य हासिल कर लिया। शुरू-शुरू में मैंने काफी मेहनत की, पर फिर मेहनत करने की इच्छा खत्म होने लगी। मैं अपने काम को नजरंदाज करने लगा। पहले कई नौकरियां बदलीं, लेकिन फिर धीरे-धीरे नौकरी, दोस्त, परिवार सब हाथ से छूटने लगे। हमें यह तो सब बताते हैं कि ऊपर पहुंचना है, लेकिन यह कभी कोई नहीं बताता कि ऊपर पहुंचने के बाद क्या करना है। लिहाजा तीन साल तक मैं अपने घर पर बेरोजगार बैठा रहा। लेकिन उस वक्त एक बात हुई, जिसने मेरी सोच बदल दी। मैंने देखा, नौकरी छूटने के बद मैं काफी खुश रहने लगा था। मै जो चाहूं, वह कर सकता था। मुझे जबर्दस्ती किसी से कोई रिश्ते बनाने की जरूरत नहीं थी, जबर्दस्ती किसी को खुश करने की जरूरत नहीं थी। मैं दिन भर गाने सुना करता या गाया करता था। मुझे उसमें कभी कोई थकान महसूस नहीं होती थी। फिर एक दिन मुझे लगा कि क्यों न मैं अपने खुद के गाने बनाऊं और सबको सुनाऊं। मैंने अपने शौक को अपना पेशा बना लिया। मुझे इस पेशे में अब बीस साल हो चुके हैं। मेरा म्यूजिक अब खुद बोलता है, मुझे किसी को उन्हें सुनाने की जरूरत नहीं पड़ती। लेकिन आज भी मैं जब वापस मुड़कर देखता हूं, तो लगता है, मैंने अभी किया ही क्या है। अभी तो मेरा मुकाम तक पहुंचना बाकी है।

सफल होने के लिए वह काम करो, जिसका तुम्हें शौक हो।

खुली खिड़की

जेलों में विचाराधीन कैदी

देश की विभिन्न जेलों में आपराधिक मामलों में विचाराधीन कैदी बंद हैं।

एक रिपोर्ट के मुताबिक, वर्ष 2018 में करीब 70% विचाराधीन कैदी जेलों में बंद थे।

स्रोत : नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो

सत्संग

जन्म नहीं, कर्म

सरस्वती के पावन तट पर सोमयज्ञ का आयोजन किया गया था। अनेक ऋषि-मुनि, पंडे तथा यजमान यज्ञस्थली के चारों ओर विराजमान थे। एक ऋषि ने जैसे ही कवष ऐलुष को देखा, तो वह आसन से उठ खड़े हुए और बोले, यह ऐलुष ब्राह्मण नहीं है, दासी का पुत्र है। यह यज्ञ में शामिल नहीं हो सकता। ऐलुष भले ही दासी-पुत्र था, पर शास्त्रों का प्रकांड पंडित, घोर तपस्वी और महान साधक था। उसका जीवन अत्यंत सात्विक था। ऋषि ने उसके सत्कर्मों की ओर ध्यान न देकर जन्म के आधार पर उसका अपमान किया था। उसे जबर्दस्ती सरस्वती के तट से बहुत दूर मरुभूमि में भेज दिया गया। उसने अपने इष्टदेव को पुकारा- आज ब्राह्मणत्व की परीक्षा है देव! ब्राह्मणत्व का निर्णय जन्म से होगा या कर्म से, यह निर्णय कीजिए। कुछ ही क्षणों में तपस्वी कवष ऐलुष की आत्मा प्रकाश से आलोकित हो उठी। यज्ञ मंडप में अंधकार छा गया। ऋषि-मुनि मरुभूमि की ओर दौड़े, उन्होंने देखा कि तपस्वी कवष ऐलुष अद्भुत प्रकाश से अलंकृत है। उनके पास ही पुण्य सलिला सरस्वती कल-कल करती प्रवाहमान हो रही है। ऋषिगण समझ गए कि ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी वही है, जिसके कर्म और चरित्र पावन हैं, जो शास्त्रज्ञ और तपस्वी हो। जन्म के आधार पर कोई ऊंचा-नीचा नहीं हो सकता। ऋषियों ने कवष ऐलुष को सादर यज्ञ में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया।

-संकलित